Subject Name – Political Science

Paper Name – Western Political Thought

Class – B. A. Sem – II (Hindi)

Name of the Teacher – Simonda. A. Raut

Title – कार्ल मार्क्स (Karl Marx)

कार्ल मार्क्स

जीवन परिचय

कार्ल मार्क्स का जन्म 5 मई सन 1818 को जर्मनी में राइन नदी के तटीय प्रदेश राइनलैंड के एक छोटे-से नगर ट्रीयर में एक सम्पन्न यहूदी परिवार में हुआ था। उसके पिता का नाम हर्शल मार्क्स था जो वकालत करता था तत्कालीन जर्मन सरकार की यहूदी विरोधी नीति से तंग आकर मार्क्स के पिता ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। इस समय मार्क्स 6 वर्ष का था। 17 वर्ष की आयु में मार्क्स बान विश्वविद्यालय में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए गया किन्तु अगले ही वर्ष उसने कानून का अध्ययन छोड़कर बर्लिन विश्वविद्यालय में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए गया, किन्तु अगले ही वर्ष उसने कानून का अध्ययन

आरम्भ कर दिया.

रचनाएँ —

1) ~~Am~~ पवित्र परिवार (Holy family)
2) दर्शन की दरिद्रता (Poverty of Philosophy)
3) साम्यवादी घोषणा पत्र (The communist Manifesto)
4) पूँजी , (Das - Capital)
5) फ्रांस में वर्ग - संघर्ष - (class struggle of France)
6) मूल्य , किमत और लाभ (Value, Price and Profit)

मार्क्स के मुख्य सिद्धान्त
(Main Principles of Marx)

1) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism)

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद मार्क्स के दर्शन का मुख्य आधार है। मार्क्स ने द्वन्द्वात्मक सिद्धान्त को प्रमुख आदर्शवादी विचारक हीगल से लिया था। द्वन्द्वात्मक यूनानी भाषा के शब्द डायलेगो (Dialego) से बना है, जिसका अर्थ है वाद - विवाद करना। वाद - विवाद में एक - दूसरे का विरोध होता है, इसलिए इसे द्वन्द्व कहा जाता है मार्क्स के शब्दों में " मनुष्य के मस्तिष्क द्वारा प्रतिबिम्बित और विचार रूप में, परिवर्तित भौतिक संसार ही मेरा आदर्श है "। मार्क्स के अनुसार समस्त अस्तित्व में हर जगह हर पल चल रहे अन्तर्विरोध का नाम ही द्वन्द्व है और किसी तत्व का विकास इसी में अन्तर्निहित है। इसलिए विकास के लिए द्वन्द्व आवश्यक है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की मूल धारणा है की विश्व का आधार भौतिक पदार्थ है। मार्क्स के अनुसार पूँजीपति वर्ग एक वाद है, सर्वहारा वर्ग प्रतिवाद है और दोनो के संघर्ष के संवाद के रूप में वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी। मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का

अन्तिम लक्ष्य वर्गविहीन समाज की स्थापना है, जिसमें न कोई वर्ग-भेद होगा न कोई न कोई शोषण। यह अन्तिम अवस्था संवाद है जो किसी प्रतिवाद को जन्म नहीं देगा। वर्गविहीन समाज की स्थापना के साथ वर्ग-संघर्ष की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया समाप्त हो जायेगी।

मार्क्स द्वारा ~~प्रति~~ प्रतिपादित द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की विशेषताएं (लक्षण)

1) विश्व के अवयवी रूप का प्रतिपादन

कार्ल मार्क्स ~~के~~ के द्वारा विश्व के एक ऐसे अवयवी रूप की व्याख्या की गयी है जिसके सभी अंश तथा वस्तुएँ आपस में एक-दूसरे से सम्बद्ध होती है विश्व समस्त स्वतंत्र वस्तुओं का संग्रह या ढेर मात्र नहीं है वरन एक समग्र इकाई है।

2) विश्व निरन्तर गतिशील है

मार्क्स के अनुसार समस्त मानव सभ्यता में गतिशीलता का गुण पाया जाता है और इसी प्रवृत्ति के कारण प्रकृति के अन्दर सदैव कुछ नयी चीजे उत्पन्न और विकसित होती है तथा पुरानी नष्ट हो जाती है।

3) विश्व में परिवर्तन गुणात्मक होते हैं

मार्क्स के अनुसार विकास क्रम के आधार पर न ~~केवल~~ केवल वस्तुओं के स्वभाव में परिवर्तन होता है वरन उसके गुण में भी परिवर्तन होता है और इसी कारण कभी-कभी

एक वस्तु पूर्ण रूप से परिवर्तित हो जाती है।

4) विश्व में परिवर्तन सरलता से जटिलता की ओर होता है।

मार्क्सवादी द्वन्द्ववाद के अनुसार विकास व परिवर्तन की यह प्रक्रिया सरल नही है वरन बहुत कठिन पेचीदी, टेढ़ी-मेढ़ी तथा घुमावदार है।

5) परिवर्तनों के कारण विश्व में होने वाले रूपान्तर आकस्मिक होते है।

उपरोक्त परिवर्तन किसी योजनाबद्ध रूप से धीरे-धीरे नही होते वरन आकस्मिक व क्रांतिकारी रूप से होते है!

मार्क्स का वर्ग-संघर्ष
(class-struggle)

मार्क्स की यह मान्यता है की इतिहास के प्रत्येक युग में एक वर्ग की प्रधानता रही है जिसने दूसरे वर्ग का शोषण किया है शोषित वर्ग ने संघर्ष करके शोषक वर्ग को हटाकर युग परिवर्तन किया है। मार्क्स की धारणा है की सम्पन्न वर्ग जिसे उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व प्राप्त है और श्रमिक वर्ग में आर्थिक और राजनितिक शक्ति प्राप्ति के लिए निरंतर संघर्ष चलता रहता है। दास युग में स्वामी और दास दो वर्ग थे, सामन्तवादी युग में सामन्त तथा कृषक वर्ग थे वर्तमान में पूंजीवाद में पूंजीपति और श्रमिक दो वर्ग है। पूंजीपतियों का उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होता है और श्रमिक अपना

श्रम बेचकर आजीविका कमाता है। दोनों वर्गों को एक-दूसरे की आवश्यकता है क्योंकि दोनों के मिले बिना उत्पादन नही हो सकता। परंतु दोनों के हित अलग-अलग है। पूंजीपति श्रमिक से अधिक से अधिक काम लेकर कम से कम वेतन देना चाहता है जबकि श्रमिक अपने श्रम का अधिक से अधिक मूल्य प्राप्त करना चाहता है। पूंजीपति श्रमिक की अपेक्षा अच्छी स्थिती लिये हुए है। श्रम नाशवान है। अतः श्रमिक अधिक समय तक प्रतीक्षा नही कर सकता। यदि वह आज काम नही करता है तो आज के श्रम से कल वह दुगुना काम नही कर सकेगा। इसका आज का ~~काम~~ श्रम बेकार चला जाता है। पूंजीपति इसी का लाभ उठाकर कम से कम किमत पर श्रम को खरीदना चाहता है। चूंकी श्रमिक की मांग की अपेक्षा पूर्ति अधिक होती है। इसलिये श्रमिक को मजबूर होकर अपना श्रम सस्ते में बेचना पडता है। परंतु जब श्रमिकों को इस शोषण का ज्ञान होता है, तो वे अपने शोषकों के विरुद्ध विद्रोह कर देते है और उन्हे नष्ट करने का प्रयास करते है। मार्क्स का यह विश्वास है कि इस संघर्ष का परिणाम सर्वहारा वर्ग की विजय ही होगा।

प्रश्न 1 मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद अपने शब्दों में स्पष्ट किजिए?

2) मार्क्स का वर्ग-संघर्ष सिद्धान्त को स्पष्ट किजिए?

3) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के लक्षण या विशेषताएं स्पष्ट करे?

संदर्भ सूची

1] पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन - डॉ. एस. सी. सिंहल - लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पब्लिकेशन - आगरा.

2] Western Political thought - Lovely Professional University.